


---

# Mahamayadevisvarupadhyanam

——  
महामायादेवीस्वरूपध्यानम्

——  
Document Information



---

Text title : Mahamaya devi svarupadhyanam

File name : mahAmAyAdevIsvarUpadhyAnaM.itx

Category : devii, dhyAnam

Location : doc\_devii

Proofread by : PSA Easwaran

Description/comments : Kalikapurana Adhyaya 53 shloka 24-34

Latest update : January 15, 2022

Send corrections to : sanskrit at cheerful dot c om

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

September 16, 2023

*sanskritdocuments.org*

---



---

# Mahamayadevisvarupadhyanam

---

## महामायादेवीस्वरूपध्यानम्

---



शोणपद्मप्रतीकाशां मुक्तमूर्धजलम्बिनीम् ॥ २४ ॥

यलत्काञ्चनामारुह्य कुण्डलोज्ज्वलशालिनीम् ।

सुवर्णरत्नसम्पन्नकिरीटद्रयधारिणीम् ॥ २५ ॥

शुक्लकृष्णारुणैर्नैस्त्रिभिश्चारुविभूषिताम् ।

सन्ध्यायन्द्रसमप्रप्यकपोलां लोललोचनाम् ॥ २६ ॥

विपक्वदाडिमीबीजदन्तान् सुभ्रूयुगोज्ज्वलाम् ।

बन्धूकदन्तवसनां शिरीषप्रभनासिकाम् ॥ २७ ॥

कम्बुग्रीवां विशालाक्षीं सूर्यकोटिसमप्रभाम् ।

यत्तुर्भुजां विवसनां पीनीन्नतपयोधराम् ॥ २८ ॥

दक्षिणोर्ध्वेन निस्त्रिंशत्परेण सिद्धसूत्रकम् ।

भिन्नतीं वामदस्ताभ्यामभीतिं वरदायिनीम् ॥ २९ ॥

निम्ननाभिक्रमायातां क्षीणमध्यां मनोहराम् ।

आनमन्नागपाशोर्गुणगुण्डां सुपाषाणिकाम् ॥ ३० ॥

अद्भुतपर्यङ्कसङ्कल्पां नीवारासनराजिताम् ।

गात्रेण रत्नसंस्तम्भं सम्यगालम्ब्य संस्थिताम् ॥ ३१ ॥

किमिच्छसीति वयनं व्याहरन्तीं मुहुर्मुहुः ।

पञ्चाननं पुरःसंस्थं निरीक्षन्तीं सुवाहनम् ॥ ३२ ॥

मुक्तावलीस्वर्णरत्नहारकेयूरकङ्कणद्विभिः ।

सर्वैरलङ्कारगणैरुज्ज्वलां सस्मिताननाम् ॥ ३३ ॥

सूर्यकोटिप्रतीकाशां सर्वलक्षणसंयुताम् ।

नवयौवनसम्पन्नां तथा सर्वाङ्गसुन्दरीम् ॥ ३४ ॥

एति कालिकापुराणे त्रिपञ्चाशत्तमाध्यायान्तर्गतं

